भरत कृत नाट्यशास्त्र का संक्षिप्त विवरण :-

→ इस ग्रंथ की रचना-काल के विषय में अनेक मत हैं, किन्तु अधिकांश विद्वानों द्वारा इसकी रचना काल पाँचवीं शताब्दी मानी जाती है। यह पुस्तक नाट्य के लिये लिखी गई है, किंतु इसके अंतिम 6 अध्यायों में संगीत संबंधी विषयों पर प्रकाश डाला गया है। इससे यह सिद्ध होता है कि उस समय संगीत का संबंध नाट्य से बहुत घनिष्ट हो गया था। नाट्य शास्त्र में निम्नलिखित सामग्रियाँ मिलती हैं :-

भरत ने केवल मध्यम और षड्ज ग्रामों का वर्णन किया है और गंधार ग्राम को पूर्णतया छोड़ दिया है। इसका उल्लेख तक नहीं किया। गंधार ग्राम के लिए भरत ने केवल इतना लिखा है कि गांधर्व लोगों के साथ स्वर्ग चला गया। षड्ज ग्राम की 7 और मध्यम ग्राम की 11 कुल मिलाकर 18 जातियाँ मानी हैं। 18 जातियों को पुनः दो भागों में विभाजित किया है, शुद्ध और विकृत। शुद्ध जातियाँ 7 हैं और विकृत 11। इसमें षड्ज और मध्यम दोनों ग्रामों की शुद्ध और विकृत जातियाँ मिली हुई हैं। जाति के दस लक्षण माने गये हैं, ग्रह, अंश, तार, मन्द्र, न्यास, उपन्यास, अल्पत्व, बहुत्व, षाडवत्व और औडवत्व। केवल काकली नि और

अन्तर ग विकृत स्वर माने गये हैं। भरत ने वादी, संवादी, अनुवादी और विवादी का वर्णन किया है। संवादी स्वरों में 9 और 13 श्रुतियों की तथा विवादी स्वर में 20 श्रुतियों की दूरी मानी है। सा, म और प की 4-4, ग और नि की 2-2 और रे तथा ध की 3-3 श्रुतियाँ मानी है।

Scanned with CamScanner